Vol 4 Issue 6 Dec 2014 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-4 | Issue-6 | Dec-2014
Available online at www.aygrt.isrj.org

श्रीगंगानगर सामाजिक एवं आर्थिक कारक प्रभावः एक अध्ययन

सुनिल वर्मा

सारांश : कृषि भूमि उपयोग को भौतिक कारकों की अपेक्षा सामाजिक एवं आर्थिक कारक अधिक प्रभावित करते हैं। नहरी सिंचाई के विकास ने अध्ययन क्षेत्र के भूमि उपयोग को प्रभावित किया है। यद्यपि वर्ष १९९८ से २००३ तक निरन्तर अकाल और सूखे की स्थिति में गांवों और अभिवृद्धि केन्द्रों की विकास प्रक्रिया को भी प्रभावित किया है।

प्रस्तावनाः–

नवाचारों का प्रसार

कृषि की नवीन तकनीकों, उर्वरकों तथा दवाईयों का प्रयोग सिंचित क्षेत्र में सामान्य है। शोध अध्येता ने नहर क्षेत्र के व्यापक सर्वेक्षण में पाया कि सिंचाई के विकास से परम्परागत कृषि अब यहाँ नहीं की जाती है। किसान कृषि प्रसार अधिकारियों तथा बीकानेर कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर से भी कृषि सम्बन्धी सलाह लेते हैं।

सिंचाई

श्रीगंगानगर जिले में सिंचाई का मुख्य साधन नहरें ही हैं। जिले में सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता राज्य के अन्य जिलों की तुलना में बहुत अच्छी है। नहरों में सिंचाई मुख्यतः गंगनहर, भाखड़ा नहर एवं इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना से की जाती है। कुछ क्षेत्र में सिंचाई घग्घर नाली से की जाती है। जिले में कोई प्राकृतिक झील या तालाब नहीं है। ट्यूबवैलों के माध्यम से भी सिंचाई की जाती है। इसके अलावा जहाँ भू–जल स्तर ऊपर है और भू–जल कृषि उपयोग की दृष्टि से उत्तम है वहाँ कुओं व नलकूपों द्वारा सिंचाई की जाती

श्रीगंगानगर जिला : साधनों के अनुसार विशुद्ध सिंचित क्षेत्र, 2008–09

Ø- l-	rglhy	d,@ V;coy	rkykc	ugj	vU; lk/ku	dy {k=Qy
1-	xxkuxj	55 ¼0-073½	&	75549 ¼99-927½	&	75604 ¼100-00½
2-	dj.kij	&	&	50660 ¼100-00½	&	50660 ¼100-00½
3-	ineij	268 ¼0-5225½	&	51015 ¼99-477½	&	51283 ¼100-00½
4-	jk;flguxj	78 ¼0-1176½	&	66220 ¼99-88½	&	66298 ¼100-00½
5-	vuix<	&	&	59015 ¼99-90½	59 ¼0-0998½	59074 ¼100-00½
6-	ljrx<	584 ¼0-9199½	&	62895 ¼99-08½	&	63479 ¼100-00½

1-	I kny'kgj	&	&	34958 ¼100-00½	&	34958 ¼100-00½
2-	fo t ;uxj	&	&	39955 ¼100-00½	&	39955 ¼100-00½
3-	?kM I kuk	&	&	50688 ¼100-00½	&	50688 ¼100-00½
	;kx	985 ¼0-20½	&	490955 ¼99-878½	59 ¼0-01199½	491999 ¼100-00½

नोटः कोष्ठक में कुल क्षेत्र का प्रतिशत दिया गया है।
स्त्रोतः जिला सांख्यिकीय रूपरेखा 2010, जिला श्रीगंगानगर, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, अगस्त 2010.

गंगनहर द्वारा सिंचाई

गंगनहर राजस्थान की पहली नहर सिंचाई परियोजना मानी जाती है। इसका निर्माण सन् १६२७ में बीकानेर के तत्कालीन महाराजा गंगासिंह ने फिरोजपुर के निकट हुसैनीवाला नामक स्थान से सतलज नदी से निकालकर किया था। ब्रिटिश साम्राज्य के समय कई देशी रियासतों के बीच होकर इतनी दूरी से मरूभूमि को सिंचित करने हेतु पानी लाना एक अचम्भे एवं कल्पना की बात ही थी।

मुख्य नहर की लम्बाई फिरोजपुर से शिवपुर (श्रीगंगानगर) तक १३७ किलोमीटर है तथा शाखाओं, प्रशाखाओं की लम्बाई मिलाकर लगभग २००० किलोमीटर है। इस नहर से श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिले की लगभग ५ लाख २५ हजार हैक्टेयर भूमि पर सिंचाई की जाती है। महाराजा गगासिंह ने इसका निर्माण ३ करोड़ रूपये में कराया था। सन् १६४८ में इस नहर को ''गंग केनाल लिंक चैनल'' से जोड़ने का कार्य प्रारम्भ हुआ था। इस लिंक चैनल का निर्माण ८० किलोमीटर लम्बा होगा। इसे इन्दिरा गाँधी नहर से पानी प्रदान किया जायेगा। लिंक चैनल का प्रारम्भ हरियाणा में लोहागढ़ से होता है। यह गंग नहर से साधुवाली नामक स्थान (श्रीगंगानगर) पर मिलती है।

गंगनहर से श्रीगंगानगर जिले में गेंहूँ, कपास, गन्ना, तिलहन, दालें, चुकन्दर, किन्नू, सब्जियाँ आदि उत्पन्न किये जाते हैं, जो ''हरित क्रान्ति" का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। इसका ऐतिहासिक महत्व इसलिए भी है कि इसी से प्रेरणा लेकर भारत सरकार एवं राजस्थान सरकार ने ''इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना'' को मूर्त रूप प्रदान किया। गंगनहर के आधुनिकीकरण के लिए ४४५.७६ करोड़ रूपये की लागत की योजना का कार्य प्रगति पर है।

इन्दिरा गाँधी नहर द्वारा सिंचाई

इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना न केवल राजस्थान राज्य के आर्थिक, समाजिक एवं भौगोलिक विकास की योजना है, बल्कि सम्पूर्ण भारत के विकास की राष्ट्रीय परियोजना है। नहर के निर्माण से मरूस्थलीय भागों में सिंचाई और पेयजल सुविधा, कृषि उत्पादन और रोजगार में वृद्धि हुई है। अध्ययन क्षेत्र में इसके निर्माण से अकाल पर कुछ सीमा तक रोक लगी है। इन्दिरा गाँधी नहर क्षेत्र भारत और पाकिस्तान की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के साथ-साथ फैला हुआ है। सिंचित क्षेत्र सीमा से ४०-५० किलोमीटर भीतर तक विस्तृत है।

नहर कार्य को सुचारू रूप से सम्पन्न करने के लिये इसे दो भागों में विभाजित किया गया है।

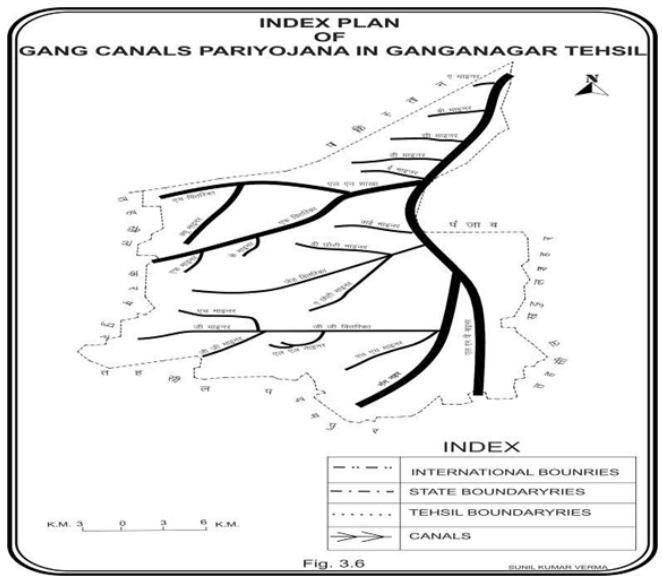

प्रथम चरण

इस चरण में २०४ किलोमीटर लम्बी फीडर नहर, १८६ किलोमीटर लम्बी मुख्य नहर (कुल ३६३ किलोमीटर) तथा ३०७५ किलोमीटर लम्बी शाखाओं और वितरिकाओं का निर्माण कार्य किया गया है। नहर का प्रारम्भ सतलज-व्यास नदियों के संगम पर स्थित हरिके बैराज तथा राजस्थान में इसका प्रारम्भ नौरंगदेसर हैडवर्क्स से होता है। इस चरण में ५.२५ लाख हैक्टेयर कृषि योग्य क्षेत्र में ११० प्रतिशत सिंचाई सघनता से ५.७८ लाख हैक्टेयर में सिंचाई की जाती है।

द्वितीय चरण

इस परियोजना के द्वितीय चरण में २५६ किलोमीटर लम्बी मुख्य नहर और ४८०० किलोमीटर लम्बी शाखाओं व वितरिकाओं का निर्माण प्रस्तावित है। इनमें से मुख्य नहर का निर्माण समाप्त किया जा चुका है। इस चरण में ६ जलोत्थान नहरों का निर्माण प्रस्तावित है, जिससे मुख्य नहर के पूर्वी भाग में सिंचाई और पेयजल की सुविधा उपलब्ध हो सके। इस चरण में कुल १०.१२ लाख हैक्टेयर कृषि योग्य क्षेत्र में ८० प्रतिशत सिंचाई सघनता से ८.१० लाख हैक्टयेर भूमि में सिंचाई प्रस्तावित है।

सिंचाई के साधन

अध्ययन क्षेत्र मे नहरें सिंचाई का प्रमुख साधन हैं। वर्ष २००८-०६ में कुल सिंचित क्षेत्र का ६६.५३ प्रतिशत तथा विशुद्ध सिंचित क्षेत्र का ६६.७६ प्रतिशत नहरों द्वारा सिंचित था। नहरों के निर्माण से सिंचित क्षेत्र में लगातार वृद्धि हुई है। वर्ष २००४-०५ में कुल सिंचित क्षेत्र १८१४४६ हैक्टेयर था। इसमें से ८६००७४ (६६.८४ प्रतिशत) हैक्टेयर नहरों द्वारा सिंचाई के अन्तर्गत था। वर्ष २००८-०६ में कुल सिंचित क्षेत्र घटकर ७३७८७० हैक्टेयर हो गया। इस तरह पिछले ५ वर्षों में सिंचित क्षेत्र में १४.२१ प्रतिशत की कमी हुई है(चित्र ३.७ और परिशिष्ट संख्या ३.२ व ३.३)।

अध्ययन क्षेत्र की सूरतगढ़ और अनूपगढ़ तहसीलों के कुछ क्षेत्रों के अतिरिक्त सभी सम्पूर्ण क्षेत्र में नहरों द्वारा सिंचाई की जाती है। करणपुर, घड़साना, सादुलशहर और विजयनगर तहसीलों में नहर ही एकमात्र सिंचाई साधन है। गंगागनर, अनूपगढ़ रायसिंहनगर, पदमपुर और सूरतगढ़ तहसीलों में विशुद्ध सिंचित क्षेत्र का क्रमशः ६६.६२, ६६.६०, ६६.८८, ६६.४७ और ६६.०८ प्रतिशत नहरों के अन्तर्गत है (परिशिष्ट संख्या ३.४ और चित्र ३.७)।

भूमिगत जल के दोहन में भी लगातार वृद्धि हो रही है। नहरों द्वारा सिंचाई से भूमिगत जलस्तर में वृद्धि तथा विभिन्न स्त्रोतों द्वारा कृषि ऋण उपलब्ध होने से कुओं और नलकूपों द्वारा सिंचित क्षेत्र में वृद्धि हुई है। वर्ष २००४-०५ में कुओं और नलकूपों द्वारा सिंचाई के अन्तर्गत कुल सिंचित क्षेत्र का ०.१६ प्रतिशत क्षेत्र था (विशुद्ध सिंचित क्षेत्र का ०.१४ प्रतिशत)। यह वर्ष २००८-०६ में ०.४६ प्रतिशत हो गया। अध्ययन क्षेत्र में सूरतगढ़ और अनूपगढ़ तहसीलों के कुछ भागों में कुएं ही सिंचाई का एकमात्र साधन है। गंगानगर के सीवरेज जल के उपयोग से भी कुछ क्षेत्र में सिंचाई की जाती है।

सिंचाई विकास ने अभिवृद्धि केन्द्रों के विकास को गति दी है। कृषि उत्पादनों की मण्डी तक पहुँच तथा द्वितीय व तृतीयक व्यवसायों से इनकी वृद्धि में सहायता मिली है।

भूमि उपयोग

श्रीगंगानगर जिले की जनसंख्या का ६०.६७ प्रतिशत भाग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि कार्यों में संलग्न है। भूमि के प्रमुख उपयोग में कृषि, वन, पशुचारण, खनन, अधिवास आदि सम्मिलित किये जाते हैं। मरूस्थलों, पहाड़ियों, नदियों, झीलों आदि के क्षेत्र मानव अधिवास के निर्माण की दृष्टि से अनुपयुक्त हैं। भूमि की सीमित मात्रा में उपलब्धता और इसके अनेक तरह से उपयोग से यह आर्थिक नियोजन के अन्तर्गत आती है। अतः भूमि संसाधन की सीमितता से इसका उपयोग इस तरह किया जाना चाहिये कि अधिकतम लाभ प्राप्त किया जा सके। अध्ययन क्षेत्र में कुल भौगोलिक क्षेत्र ६.७५ प्रतिशत (७४१३५३ हैक्टेयर) क्षेत्र वर्ष २००८-०९ तक सिंचाई के अन्तर्गत लाया गया है। अध्ययन क्षेत्र के अन्य भागों में मानसून आधारित कृषि तथा घुमक्कड़ पशुचारण होता है। अध्ययन क्षेत्र में नहरी सिंचाई के विकास से भूमि उपयोग में व्यापक परिवर्तन आया है। क्षेत्र में शुद्ध बोये गये क्षेत्र में लगातार वृद्धि हुई, लेकिन वनों के अन्तर्गत क्षेत्र में स्थिरता रही है, जबकि कृषि योग्य भूमि के क्षेत्रफल में कमी आयी है। (परिशिष्ट ३.५, ३.६ व ३.७)।

श्रीगंगानगर जिलाः भूमि उपयोग

Ø- l-	Hkfe mi;kx dk oxhdj.k	2004&05		2008&09	
		{k=Qy ¼gDV;j e½	dy {k=Qy dk ifr'kr	{k=Qy ¼gDV;j e½	dy {k=Qy dk ifr'kr
1-	ou	55867	4-96	60536	5-3459
2-	xj –f"k mi;kx e Hkfe	62341	5-5348	67837	5-9907
3-	ctj ,o v–f"kr Hkfe	6749	0-599	2580	0-227
4-	iMr Hkfe d vfrfjDr vU; v–f"kr Hkfe	48937	4-344	41117	3-6310
5-	–f"k ;kX; [kkyh Hkfe	43305	3-844	39025	3-446
6-	iMr Hkfe	143332	12-725	224452	19-82
7-	'k) ck;k x;k {k=	765812	67-99	696820	61-5365
	dy ;kx	1126343	100-00	1132367	100-00

स्त्रोतः जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, २०१० जिला श्रीगंगानगर, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, मार्च २०१०.

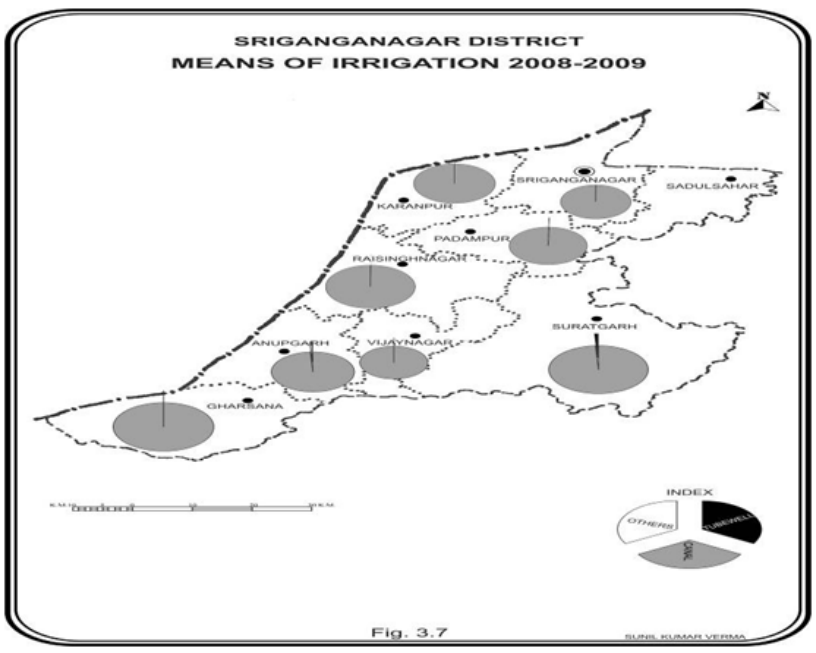

श्रीगंगानगर जिलाः भूमि उपयोग (२००८-०६)

Ø-l-	Hkfe mi;kx dk oxhZdj.k	{k=Qy ¼gDV;j e½	dy {k= dk ifr'kr
1-	ou	60536	5-5464
2-	—f"k d vfrfjä dke e yh xb Hkfe	67837	6-21533
3-	Ålj ,o ctj ¼—f"k v;kX; ½ Hkfe	2580	0-23638
4-	LFkk;h pkjkxkg	186	0-00971
5-	—f"k ;kX; ctj Hkfe	39025	3-57553
6-	vU; iMr Hkfe	110128	10-0901
7-	Pkky iMr Hkfe	114334	10-47546
8-	'k) ck;k x;k {k=	696820	63-84374
	;kx	1091446	100
	leLr ck;k x;k {k=	952546	
	,d ckj l vf/kd ck;k x;k {k=	255726	

स्त्रोत- जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, श्रीगंगानगर, २०१०

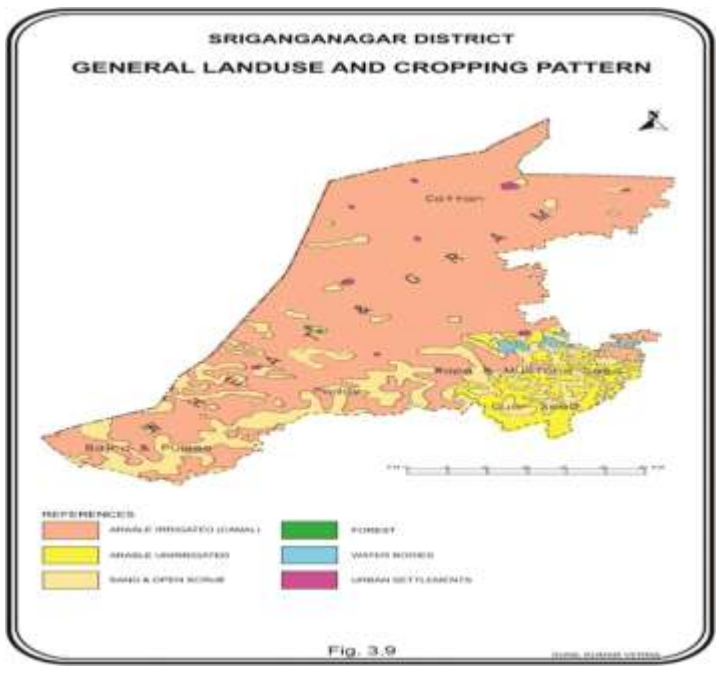

वन

अध्ययन क्षेत्र भारतीय मरूस्थल का भाग है। यहाँ की प्राकृतिक वनस्पति मरूभिद् प्रकार की है (अध्याय द्वितीय)। नहरी सिंचाई के विकास से वनारोपण, सामाजिक वानिकी, टिब्बा स्थिरीकरण आदि कार्यक्रमों से अध्ययन क्षेत्र में वनों के अन्तर्गत क्षेत्र में वृद्धि हुई है। वर्ष १९९४-९५ में वनों के अन्तर्गत कुल भौगोलिक क्षेत्र का ५.४१ प्रतिशत क्षेत्र था। वर्ष २००४-०५ में यह बढ़कर ५.४२ प्रतिशत तथा वर्ष २००८-०९ में ५.५५ प्रतिशत हो गया। यद्यपि वनों का प्रतिशत राज्य स्तर (९.४९ प्रतिशत) और राष्ट्रीय स्तर (१९.२७ प्रतिशत) की तुलना में बहुत कम है। अध्ययन क्षेत्र में तहसील स्तर पर नहरी सिंचित तहसीलों सूरतगढ़, घड़साना, पदमपुर में वनों के अन्तर्गत क्षेत्र अध्ययन क्षेत्र के औसत से अधिक है। इन तहसीलों में अध्ययन क्षेत्र के कुल वनों का लगभग ७० प्रतिशत क्षेत्र है। अन्य तहसीलों में बिखरी हुई मरूभिद् वनस्पति पायी जाती है।

REFERENCES:

1.http://www.readwhere.com/publication/747/Rajasthan-Patrika-Ganganagar

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org